उद्बोधन भाषण

रायल स्वीडिस एकेडमी आफ साइंसेज के प्रोफेसर लेन्नार्ट जोरबर्ग का उद्बोधन भाषण

स्वीडिश सामग्री का अनुवाद

यॉर मैजेस्टीस, यॉर रायल हाइनेस, लेडीज और जेंटलमैन।

आर्थिक सिद्धांत और मात्रात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए आर्थिक एवं संस्थागत परिवर्तन की व्याख्या कर आर्थिक इतिहास के क्षेत्र में एक नया शोध करने के लिए इस साल का अर्थशास्त्र के क्षेत्र का नोबेल पुरस्कार रॉबर्ट फॉगेल और डगलस नॉर्थ को दिया गया है।

क्यों कुछ देश धनी जबकि अधिकतर गरीब हैं? क्यों कुछ देशों में अन्य देशों की तुलना में आर्थिक विकास की गति काफी तेज है जबकि अन्य की स्थिति स्थिर या आर्थिक रूप और खराब हुआ है? इस साल के पुरस्कार विजेताओं ने इस तरह के सवालों का जवाब इतिहास के साथ अर्थव्यवस्था को जोड़ते हुए खोजने की कोशिश की है और आर्थिक विकास और परिवर्तन को समझने और अध्ययन करने के लिए एक मार्ग की ओर इशारा किया है। इन्होंने आर्थिक विज्ञान की बेहतरीन विश्लेषणात्मक तकनीक का इस्तेमाल किया है और इसे ऐतिहासिक आंकड़ों के साथ जोड़ा है। दूसरे शब्दों में, इन्होंने इन गहरे सवालों को समझने और गंभीर परिवर्तनों की व्यख्या करने के लिए आर्थिक सिद्धांत, मात्रात्मक पद्धति, परिकल्पनाओं का परीक्षण, प्रतितथ्यात्मक विकल्पों और परंपरागत आर्थिक इतिहास की पद्धति को एकीकृत किया है।

फॉगेल ने यह दिखाया है कि आर्थिक विकास के लिए रेलवे अत्यंत पूर्वापेक्षित नहीं था जैसा कि कई विद्वानों ने औपचारिक रूप से इसकी दुहाई दी थी। संयुक्त राज्य अमेरिका के आर्थिक विकास में रेलवे की भूमिका का फॉगेल द्वारा किए गए विश्लेषण ने आज के विद्वानों को आधुनिक आर्थिक विकास की व्याख्या के क्रम में 'इन महान आविष्कारों' की महत्वपूर्ण भूमिका का गुणगान करने से सचेत कर दिया है। फॉगेल तथाकथित प्रतितथ्यात्मक विश्लेषणों और 'सोशल कास्ट बेनिफिट' विश्लेषण के आधार अपने निष्कर्ष पर पहुंचते हैं जिसकी अन्य विद्वानों ने संपुष्टि की है। सभी फॉगेल से प्रभावित हुए हैं।

आर्थिक और सांख्यिकीय तकनीक के साथ विशाल आंकड़ों की मदद से फॉगेल ने यह भी दिखाया है कि गुलामी के प्रति नौतिक तौर पर घृणा होने के बावजूद वह एक सक्षम

बाजार समाधान था। गुलामी अक्षमता के कारण खत्म नहीं हुई थी बल्कि उसके खात्मे के लिए राजनीतिक निर्णय की जरूरत पड़ी थी।

आर्थिक विकास की समस्या को स्पष्ट तौर पर समझने की कोशिश में फॉगेल ने जनसांख्यिकीय कारणों पर भी जोर दिया है। उनके बड़े अंतर्राष्ट्रीय शोध संस्थान, स्वयं और सहयोगियों ने न केवल एक व्यापक आंकड़े को इकट्ठा कर उसपर काम किया है बल्कि यह भी दिखाया है कि उनकी पोषकता और मरणशीलता के बीच अंतःसंबंध अपूर्ण है और कई ऐसे सवाल बच जाते हैं जिनका उत्तर ढूढना है।

डगलस नॉर्थ ने गृह युद्ध के दौर में काफी महत्व रखने वाले अमेरिका के आर्थिक विकास और काफी व्यापक परिदृश्य में यूरोप के विकास का अध्ययन किया। फॉगेल की तरह नॉर्थ ने दिखाया है कि तकनीकी परिर्वतन बढ़ी हुई उत्पादकता की पर्याप्त व्याख्या करने में नाकाफी है। उदाहरण के लिए समुद्रपार व्यापार में काफी उच्च स्तर तक उत्पादकता बढ़ी है जो संस्थागत परिवर्तनों से काफी दूर है।

उन्होंने यह भी दिखाया है कि परंपरागत सैद्धांतिक विश्लेषण में निश्चित तौर पर संस्थागत विकास के अध्ययन को शामिल किया जाना चाहिए। आर्थिक परिवर्तन को समझने के लिए यह महत्वपूर्ण कड़ी है।

नॉर्थ ने संस्थाओं की उस भूमिका को रेखांकित किया है जिसमें वे मानवीय गतिविधियों के लिए स्थायी संरचना बनाकर अस्थिरता को कम करती हैं, हालांकि यह हमेशा सक्षम नहीं होता। संस्थाओं को लिखित और अलिखित नियमों और उसके प्रयोग के संकेतक के रूप में समझा जाना चाहिए जो हमारी कार्य पद्धति पर प्रभाव डालता है। संस्थागत अस्थिरता की अनुपस्थिति में उत्पादक और उपभोक्ता दोनों को कीमत चुकानी पड़ती है। संपति अधिकार की अस्पष्ट व्याख्या और संविदाओं के लिए शर्तों को पूरा करने की दिक्कत तर्कशील आर्थिक फैसले के रास्ते में बाधा है। मध्यकाल से यूरोप के दीर्घकालिक विकास को समझने के क्रम में आर्थिक विकास और आर्थिक परिवर्तन के रास्ते में रूकावट के संदर्भ में निश्चित रूप से हमें संस्थाओं की भूमिका के बारे विश्लेषण करने में सक्षम होना चाहिए।

इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति क्यों हुई? इसके पीछे एक कारण यह है कि राज्य की भूमिका कम थी और संघ व्यवस्था कमजोर थी। फ्रांस में आर्थिक गतिविधियों और विदेशी व्यापार के मजबूत होने के साथ आर्थिक नियामक बने लेकिन आर्थिक विकास बहुत

कमजोर था। 17वीं और 18वीं शताब्दी में स्पेन के कमजोर आर्थिक विकास के लिए राज्य के कड़े नियमों और कड़ी सांस्थानिक बाधाओं, जैसे संपत्ति के अधिकार से जुड़े नियमों में अस्पष्टता को जिम्मेदार माना गया।

इन सांस्थानिक कारकों के महत्व का बारीकी से अध्ययन कर हम पूर्व में गैर पश्चिमी देशों में आर्थिक गतिशीलता में कमी, पूर्वी यूरोपीय समाज के बिखराव और तथाकथित तीसरी दुनिया के देशों की वर्तमान आर्थिक समस्याओं की व्याख्या कर सकते हैं, जिसने तेज आर्थिक परिवर्तन की संभावना को बाधित कर दिया।

दूसरे शब्दों में यह आर्थिक इतिहास की समस्याओं से निपटने का उनका अपना तरीका व पद्धति है जो किसी भी चीज से ज्यादा महत्व रखता है। इसने नए आर्थिक इतिहास के क्षेत्र के विद्वानों की कतार में इस साल के नोबेल पुरस्कार विजेताओं को पहले पायदान पर पहुंचा दिया है। रॉबर्ट फॉगेल और डगलस नॉर्थ इस शोध में अग्रणी रहे हैं, जिनका आर्थिक इतिहास को एक विषय के रूप में विकसित करने में काफी योगदान रहा है। अपनी अलग-अलग पद्धतियों से फॉगेल और नॉर्थ ने आर्थिक इतिहास के अध्ययन को ज्यादा सुगठित और सैद्धांतिक बनाया है। साथ ही उन्होंने आर्थिक विश्लेषण में ऐतिहासिक आयाम की जरूरत को प्रदर्शित किया है।

रॉयल स्वीडिश एकेडमी आफ साइंसेज की ओर से प्रोफेसर फॉगेल और प्रोफेसर नॉर्थ को आर्थिक इतिहास के क्षेत्र में उनके सराहनीय शोध के लिए बधाई देते हुए मुझे खुशी हो रही है और मैं उनसे आर्थिक विज्ञान का नोबेल मेमोरियल पुरस्कार उनके महामहिम के हाथों से ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करता हूं।

नोबेल लेक्चर्स, इकोनॉमिक्स 1991-1995, संपादक टार्सटेन पर्सन, वर्ल्ड साइंटिफिक पब्लिशिंग कंपनी, सिंगापुर 1997।